क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

THE MENTORING PROJECT

ईमानदारी का महत्व: शालीनता से सच कैसे कहें

CHRISTIAN LAWRENCE

ईमानदारी का महत्व:
शालीनता से सच कैसे कहें

CHRISTIAN LAWRENCE

(क्रिश्चियन लॉरेंस)

विषय-सूची

परिचय: ईमानदारी की समस्या.. 4

भाग I: ईमानदारी के तीन सिद्धान्त.. 8

भाग II: ईमानदारी से सम्बन्धित सात अभ्यास 17

भाग III: ईमानदारी की खोज.. 29

भाग IV: ईमानदारी का वादा 33

परिचय:
ईमानदारी की समस्या

ईमानदार होना इतना कठिन क्यों है? मुझे हैरानी होगी, यदि आपने कभी अपने आपसे यह प्रश्न पूछा है। हो सकता है कि आपको किसी को कठोर समाचार सुनाना पड़ा हो, और आप ऐसा करने का साहस न जुटा पाए हों; या किसी पाप का अंगीकार करना हो, और आप चिन्ता कर रहे हों कि यदि आपने ऐसा किया है, तो क्या होगा; या किसी को कोई राय देनी हो, और आपको निश्चय न हो कि वे इसे कैसे स्वीकार करेंगे। ईमानदारी क्यों महत्वपूर्ण है, ऐसे प्रश्न अक्सर इन्हीं पलों में उठते हैं, जब सच्चाई और डर के बीच का तनाव असहनीय लगने लगता है।

हो सकता है कि आपकी समस्या इसके ठीक उलट हो। आप ईमानदार होने में बहुत ही ज्यादा प्रसन्न रहते हैं, परन्तु कोई भी इसे अच्छे से स्वीकार नहीं करता। असल में, लोगों ने इस बारे में आपसे बात भी की होगी। आप कठोर हैं। आपमें दया नहीं है। आप आक्रामक हैं। आपकी "ईमानदारी" से बिलकुल भी अच्छे परिणाम नहीं मिल रहे हैं। ऐसी परिस्थितियाँ हमें फिर से ईमानदारी के महत्व की याद न केवल इस बात में दिलाती हैं कि हम क्या कहते हैं, बल्कि इस बात में भी कि हम उसे कैसे कहते हैं।

ईमानदारी को लेकर हमारे संघर्षों की जड़ इस बुनियादी गलतफहमी में है कि ईमानदारी असल में क्या है। हम जानते हैं कि सच्चाई से इसका कुछ तो लेना-देना है, परन्तु किसी तरह हम इसे ठीक से कह ही नहीं पाते। हम या तो बहुत कम या बहुत अधिक बताते हैं। जब हमें बोलना चाहिए, तब हम चुप रहते हैं, और जब हमें चुप रहना चाहिए, तब हम बोलते हैं। हम इन तरीकों पर जितना अधिक ध्यान लगाते हैं, उतना ही अधिक हम स्वस्थ और भरोसेमन्द रिश्ते बनाने में ईमानदारी के गहरे महत्व को समझते हैं।

सहायता करने के लिए, आइए इस पर विचार करें, कि हम सबसे पहले कहाँ विफल होते हैं, और फिर इस पर विचार करें, कि असल में सच्ची ईमानदारी क्या है। ऐसे चार तरीके हैं, जिनसे हम ईमानदार होने में विफल हो सकते हैं। इनमें से कुछ बातें आपको साफ-साफ समझ आ सकती हैं, और बाकी आपको हैरान कर सकती हैं। मैं आपको प्रोत्साहित करूँगा, कि आप सच में इस बात पर विचार करें, कि आप इनमें से किसकी तरफ खिचे चले जाने की परीक्षा में पड़ते हैं। जब हम इस बात पर चर्चा करेंगे, कि पवित्रशास्त्र में परमेश्वर ने हमें किस बात के लिए बुलाया है, तो इससे आपको ईमानदारी के महत्व की बेहतर ढंग से सराहना करने में सहायता मिलेगी। पवित्रता में ढलने के लिए पवित्रशास्त्र को अनुमति देने का एक भाग यह भी है कि हम सबसे पहले अपने पापों की बारीकियों को समझें। पौलुस हमें धार्मिकता को "पहन लेने" से पहले, अपने पापों को "उतार डालने" को कहता है (इफि. 4:25)।

ईमानदारी की चार विफलताएँ

ईमानदारी की पहली विफलता सम्भवत: सबसे स्पष्ट है। इसमें हम अपने बारे में कुछ ऐसी बातें नहीं बताते, जो हमें बतानी चाहिए, जैसे कि जब कोई हमसे सीधा प्रश्न पूछता है और हम उसके बारे में झूठ बोलते हैं, या जब हमें अपने जीवन में किसी पाप की अंगीकार करने की आवश्यकता होती है, तो हम ऐसा नहीं करते। आप ऐसा क्यों करते हैं? अक्सर, जब हम अपने बारे में कुछ बताने में विफल रहते हैं, तो यह हमारी लज्जा को छिपाने का एक तरीका होता है। इस सन्दर्भ में ईमानदारी के महत्व को समझना हमें यह देखने में सहायता करता है कि बातों को छिपाना कैसे समस्या को केवल और गहरा करता है।

दूसरी विफलता ठीक इसके उलट है, और शायद सबसे कम स्पष्ट है। इसमें आप अपने बारे में कुछ ऐसी बातें बताते हैं, जो आपको नहीं बतानी चाहिए। यह कुछ ऐसा हो सकता है, जो रिश्तों के तौर पर अनुचित हो, या यह आपके बारे में किसी सच्ची बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताना हो सकता है। आप ऐसा क्यों करते हैं? अक्सर, हम अपने रिश्तों को नियंत्रित करने के लिए बहुत अधिक या बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं।

तीसरी विफलता का सामना हम तब करते हैं, जब हम दूसरे लोगों को उनके बारे में ऐसी बातें बताने से बचते हैं, जो हमें बतानी चाहिए। शायद उन्हें सुधार के लिए किसी बात की आवश्यकता हो, और आप उसे बताने से बचते हैं। आपको इस बात की चिन्ता होती है कि वे कैसी प्रतिक्रिया देंगे, या आप

उस रिश्ते को खोना नहीं चाहते, इसलिए आप किसी के पाप या गलती को सुधारने से पीछे हट जाते हैं। यहाँ भी, ईमानदारी का महत्व साफ हो जाता है कि शायद चुप रहना सुरक्षित लगे, परन्तु असल में यह नुकसान को बढ़ा सकता है।

अन्त में, चौथी विफलता तब आती है, जब हम दूसरे लोगों के साथ इससे सम्बन्धित बहुत अधिक बातें करते हैं कि हम उनके बारे में क्या सोचते हैं। शायद आप उस बात को समझाने के लिए सच को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं। या आप दूसरों की मंजूरी पाने के लिए उनकी चापलूसी करते हैं।

ईमानदार रहने में आप सबसे अधिक किस मामले में विफल रहते हैं?

अब, इन विफलताओं को सुधारने का तरीका जानने के लिए, हमें अपने लक्ष्यों को परमेश्वर के लक्ष्यों के अधीन करना होगा। हमें उस बात पर विचार करना होगा, जिसे परमेश्वर सच्ची और अच्छी के रूप में परिभाषित करता है। इसलिए, अगली बार, हम ठीक इसी बात पर विचार करेंगे: अर्थात् बाइबल-आधारित ईमानदारी—और मसीही जीवन में ईमानदारी के गहरे महत्व को बाइबल हमें बार-बार क्यों दिखाती है।

परन्तु इससे पहले कि हम वहाँ पहुँचें, शायद आपको लगे कि ये बातें कुछ हद तक एक परीकथा जैसी हैं। आपने बाइबल-आधारित ईमानदारी से हार इसलिए मान ली है, क्योंकि यह आपको बहुत अधिक आदर्शवादी और आपकी दैनिक वास्तविकता से बहुत दूर लगती है। आपने ईमानदारी पर इफि. 4:15 जैसी बाइबल की अति उत्कृष्ट आयतें पढ़ी हैं, परन्तु उनसे कोई सहायता मिलती प्रतीत नहीं होती। अभी-अभी बताए गए चार तरीकों में से किसी एक में आप बार-बार विफल होते रहते हैं। आप झगड़े को अनदेखा करते हैं या उसे भड़काते हैं। आप दूसरों को दु:ख पहुँचाते हैं, या आप सच छिपाते हैं।

यदि आप ऐसे हैं, तो याद रखें कि ईमानदारी का महत्व इस बात से नहीं मापा जाता कि आपने अतीत में इसे कितनी सिद्धता से जिया है, बल्कि इसे उस आशा से मापा जाता है जो परमेश्वर आपको आज इसमें आगे बढ़ने के लिए देता है। मसीहियत में ईमानदारी सिद्धता के बारे में नहीं है—यह बदलाव के बारे में है।

मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि एक बेहतर मार्ग की आशा मौजूद है। मसीहियत में ईमानदारी आपकी स्वाभाविक क्षमता पर नहीं, बल्कि यह परमेश्वर के अलौकिक अनुग्रह पर

आधारित है। ईमानदारी के बारे में बाइबल के वचन हमें सच बोलने के लिए कहते हैं, परन्तु पवित्रशास्त्र हमें ऐसा करने के लिए तैयार भी करता है। जब परमेश्वर ईमानदारी की आज्ञा देता है, तो वह इसका पालन करने के लिए सामर्थ्य भी प्रदान करता है।

आइए, एक पल के लिए इफि. 4:15 पर वापस लौटें, क्योंकि मेरे विचार से हमें ईमानदारी के मूल सिद्धान्त और अभ्यास यहीं मिलते हैं—जिसे हम बाइबल-आधारित ईमानदारी का हृदय कह सकते हैं। इसे धीरे-धीरे पढ़ने का प्रयास करें।

इफि. 4:15: "वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ।"

यहीं पर हम एक विश्वासी के जीवन में ईमानदारी के महत्व को जीवन्त होते हुए देखते हैं। इससे पहले कि हम आरम्भ भी करें, बस विचार करें कि यह सुनने में कितना अच्छा लगता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमें प्रेरणा की आवश्यकता होगी। प्रेम में सच बोलना कठिन काम है—और कभी-कभी यह सबसे कठिन काम होता है। और फिर भी, यहाँ हमें रिश्तों का कितना आकर्षक दृश्य देखने को मिलता है। परमेश्वर के साथ रिश्ते का यह कितना आकर्षक दृश्य है।

बाइबल-आधारित ईमानदारी ठण्डी सच्चाई या गरम चापलूसी नहीं है—यह प्रेम में लिपटी हुई सच्चाई है, जिसे मसीह ने आकार दिया है, और जो ईमानदारी के उस महत्व पर आधारित है, जो पवित्रशास्त्र से ही बहता है।

1

ईमानदारी के तीन सिद्धान्त

तो हम कहाँ से आरम्भ करें? हमें इस प्रश्न से आरम्भ करना होगा कि: ईमानदारी क्या है?

आइए मैं आपको ईमानदारी की एक सरल परिभाषा दूँ, जिसे हम आगे इफि. 4:15 की पड़ताल करते हुए विस्तार से समझेंगे।

दूसरों से प्रेम करने और परमेश्वर का आदर करने के लिए उचित सच्चाई साझा करना ही ईमानदारी है।

इफि. 4:15 में ईमानदारी के तीन सिद्धान्त मिलते हैं, जो इस परिभाषा में योगदान देते हैं।

1. ईमानदारी परमेश्वर का आदर करती है

हमारी आयत के अन्तिम भाग को फिर से देखें: “वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ।”

ईमानदारी की अच्छाई, आनन्द और सुन्दरता का स्रोत स्वयं परमेश्वर है। मसीह में ही हम ईमानदारी का सबसे आकर्षक, शक्तिशाली और प्रेमपूर्ण चित्रण देखते हैं। परमेश्वर में ही हम बिना किसी प्रतियोगिता के सच्चाई की सिद्ध चमक और प्रेम की गर्माहट को मेल-जोल में देखते हैं।

केवल परमेश्वर के वचन ही सत्य हैं। केवल वे ही भले हैं। इसलिए, जब हम ईमानदार होते हैं, तो हम परमेश्वर के ईमानदार चरित्र को प्रतिबिम्बित करते हैं। मैं इसे दोहराता हूँ। ईमानदार होना परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिम्बित करना है। इसका अर्थ सचमुच उसे प्रतिबिम्बित करना है। हमारी ईमानदारी परमेश्वर का आदर करती है। इसी कारण से ईमानदारी महत्वपूर्ण है—न केवल सामाजिक सामंजस्य के लिए, बल्कि इसलिए कि सच्चा होना उस परमेश्वर के उस चरित्र को ही प्रतिबिम्बित करता है,

जिसने हमारा उद्धार किया है। ईमानदारी की अपनी खोज में, परमेश्वर की महिमा करना ही हमारा पहला और अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए।

ईमानदारी के महत्व को समझना यहीं से आरम्भ होता है: इसमें उसकी महिमा, उसके नाम और उसकी प्रतिष्ठा से कम कुछ भी दाँव पर नहीं है। हम उसी के स्वरूप में बनाए गए हैं। इससे भी बढ़कर, हमें उसके पुत्र, मसीह के द्वारा छुड़ाया गया है। इसलिए, जब हम यह सोचते हैं कि सच्चा कैसे बनें, तो हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारे शब्द दोहरी तरह से उसे प्रतिबिम्बित करते हैं—और हमारे झूठ दोहरी तरह से उसके सम्मान को कलंकित करते हैं।

यह इतनी महत्वपूर्ण बात है कि यीशु ने यूहन्ना 8 अध्याय में बड़ी कठोर भाषा में इसे पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया है। फरीसी यह दावा कर रहे थे कि अपनी विरासत के कारण वे परमेश्वर की दृष्टि में सही हैं। वे अब्राहम की सन्तान हैं, इसलिए परमेश्वर उनसे अवश्य ही प्रसन्न होगा। परन्तु यीशु ने इसे बिलकुल भी स्वीकार नहीं किया।

असल में, यीशु कहता है कि उनकी एक विरासत तो है। परन्तु वे परमेश्वर की सन्तान नहीं हैं। वह कहता है, "तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं" (यूह. 8:44)।

ये चौंकाने वाले शब्द हैं। उनके झूठ और पाखण्ड के कारण, यीशु उन्हें शैतान की सन्तान कहता है। बेईमानी कभी भी हाशिए पर नहीं होती—यह इस बारे में एक कहानी बताती है कि हम क्या विश्वास करते हैं, हम किस पर भरोसा करते हैं, और हम किसके चरित्र की नकल कर रहे हैं।

इसके बिलकुल विपरीत, हमारी ईमानदारी परमेश्वर का आदर करती है। यह उसके चरित्र, उसके गुणों और उसके व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित करती है। मसीही जीवन में ईमानदारी का यही महत्व है: प्रभु की महिमा करने और शैतान को सम्मान देने के बीच का अन्तर ही ईमानदारी का हमारा लक्ष्य है।

क्या आप अपने शब्दों के बारे में इसी तरह सोचते हैं? क्या आप उन्हें परमेश्वर के बारे में सत्य को प्रतिबिम्बित करने वाले, या उसके चरित्र के बारे में झूठ बोलने वाले के रूप में देखते हैं? अक्सर, हम सत्य को तोड़-मरोड़कर पेश करने के परीक्षा में पड़ जाते हैं, क्योंकि हमें यह एहसास नहीं होता कि दाँव पर क्या लगा हुआ है। हमने अपने शब्दों के महत्व पर विचार ही नहीं किया होता।

सच बोलना: कठोरता रहित ईमानदारी

इस पल का उपयोग इस बारे में सोचने के लिए करें, कि अन्तिम बार आपने कब सत्य को छिपाया था, जब आपको उसे बोलना चाहिए था; या वह समय जब आपने अपनी बात साबित करने के लिए उसे बढ़ा-चढ़ाकर कहा था; या जब आपने बदले के हथियार के रूप में सत्य का उपयोग उस व्यक्ति को चोट पहुँचाने के लिए किया था, जिसने आपको चोट पहुँचाई थी।

यहाँ ईमानदारी क्यों महत्वपूर्ण है? क्योंकि उनमें से प्रत्येक का चुनाव या तो आपके छुड़ानेवाले को प्रतिबिम्बित करता है, या फिर उसे गलत तरीके से प्रस्तुत करता है।

सच्चा बनना सीखने का आरम्भ उस महत्व को महसूस करने से, और ईमानदारी को उस परमेश्वर का आदर करने के एक तरीके के रूप में देखने से होता है, जिसका स्वरूप आप धारण किए हुए हैं।

हे मित्र, हमें परमेश्वर की महिमा से ही आरम्भ करना चाहिए। हमारे शब्द अनन्त महत्व रखते हैं। हम या तो अपनी ईमानदारी से परमेश्वर का आदर करेंगे, या इसके बिना उसका अनादर करेंगे।

इसका एक निहितार्थ यह है कि दूसरों के साथ ईमानदारी की यात्रा, परमेश्वर के साथ ईमानदार होने से आरम्भ होती है। वैसे भी, हम परमेश्वर का आदर केवल अपने शब्दों से ही नहीं, बल्कि अपने विचारों से भी करते हैं। ईमानदारी का महत्व हृदय से आरम्भ होता है, जहाँ परमेश्वर के साथ ईमानदारी ही लोगों के साथ ईमानदारी को आकार देती है।

यीशु ने उन फरीसियों को सुधारा, जो बाहर से तो धर्मी दिखते थे, परन्तु भीतर से वे बीमार थे। उनकी समस्या मुख्य रूप से उनके शब्द नहीं, बल्कि उनके हृदय थे। यीशु ने उनसे पूछा, "तुम बुरे होकर कैसे अच्छी बातें कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है" (मत्ती 12:34)।

हे मित्र, हो सकता है कि आप सारी सही बातें कहो, परन्तु यदि आप सबसे पहले परमेश्वर के साथ ईमानदार नहीं हैं, तो इससे आपका कोई भला नहीं होगा। असल में, यीशु के अनुसार, आप दूसरों के साथ भी ईमानदार नहीं रह पाओगे। शायद कोई आपको पकड़ न पाए। फरीसियों को उनके शब्दों के खेल में कोई भी पकड़ नहीं पाया था। परन्तु परमेश्वर इसे देखेगा। और आपकी बेईमानी उसका अनादर करेगी। हमें सबसे पहले अपने भीतर से सही होने की आवश्यकता है।

यही एक कारण है कि मसीही जीवन में ईमानदारी के महत्व में परमेश्वर के सामने हमारी निजी, अनदेखी ईमानदारी भी शामिल है। बाहर से सच बोलना, भीतर से सच बोलने से आरम्भ होता है—और यह उसके सामने होता है, जो पहले से ही सब कुछ जानता है।

ईमानदारी वाला जीवन जीने में हमारा सबसे बड़ा लक्ष्य परमेश्वर का आदर करना होना चाहिए। परन्तु ईमानदारी का एकमात्र सिद्धान्त यही नहीं है। ईमानदारी न केवल परमेश्वर की महिमा करती है, बल्कि यह दूसरों से प्रेम भी करती है।

2. ईमानदारी दूसरों से प्रेम करती है

यह बात सीधे हमारी आयत से आती है। "वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ।" दूसरों से प्रेम करने का अर्थ उनके साथ ईमानदार होना है।

हमारी संस्कृति "प्रेम" की परिभाषाओं से भरी पड़ी है। शायद आप प्रेम के प्रमाण चिन्ह वाले रूप से परिचित हों। प्रेम एक सुखद और कोमल एहसास है। प्रेम के इस संस्करण में, ऐसा कुछ भी करना प्रेम नहीं माना जाता, जिससे किसी दूसरे व्यक्ति को बेचैनी या पीड़ा हो, क्योंकि इससे प्रसन्नता और आराम का एहसास समाप्त हो जाता है।

या शायद आपने भी "जियो और जीने दो" के इस नारे को हलके में ले लिया हो। प्रेम के इस संस्करण में, दूसरों की कमियाँ गिनाना प्रेम नहीं माना जाता, क्योंकि प्रेम का अर्थ दूसरों को वैसा ही रहने देना है, जैसे वे हैं।

या अधिक सम्भावना यह है कि आपने इस पुस्तक में पाया जाने वाला प्रेम का सबसे पुराना रूप अपना लिया हो, "अपने आपसे प्रेम करो।" प्रेम का यह रूप असल में सबसे बड़ा भटकाव है। अदन की वाटिका में, शैतान ने आदम और हव्वा से कहा था कि उन्हें सबसे पहले अपने बारे में सोचना चाहिए और "तुम परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे" (उत्प. 3:5)। प्रेम का अर्थ अपना ध्यान रखना, अपने स्वभाव के अनुसार होना, और स्वयं से लाड़-प्रेम करना है।

असल में, इन सभी बातों की जड़ एक ही है: ये सभी आत्म-केन्द्रित हैं। यीशु प्रेम को हमारे सन्दर्भ में नहीं, बल्कि परमेश्वर के सन्दर्भ में परिभाषित करता है। सुनो वह क्या कहता है: "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य

आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख" (मत्ती 22:37–39)।

जब यीशु से पूछा गया कि सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है, तो उसने फरीसियों का ध्यान सबसे पहले परमेश्वर के प्रेम की ओर लगाया। सम्पूर्ण व्यवस्था की यही सबसे आवश्यक और पहली बात है। यह पहला सिद्धान्त है, जिस पर हमने अभी-अभी विचार किया है।

परन्तु फिर ध्यान दें कि वह आगे क्या करता है। वह कहता है कि दूसरी आज्ञा भी इसी के समान है। पड़ोसी से प्रेम करना, परमेश्वर से प्रेम करने से अलग नहीं है। ये दोनों आपस में बहुत गहराई से जुड़े हुए हैं, और स्वाभाविक रूप से तथा अनिवार्य रूप से परमेश्वर के प्रेम से ही प्रवाहित होते हैं। परमेश्वर के प्रति सच्चा प्रेम, पड़ोसी के प्रति सच्चा प्रेम भी उत्पन्न करेगा।

और हमारे विषय के लिए यह बहुत शुभ समाचार है। इसका अर्थ यह है कि हमारे ईमानदार शब्द न केवल उस परमेश्वर की महिमा करते हैं, जिसने हमें रचा और छुड़ाया, बल्कि ईमानदार शब्द बोलना हमारे पड़ोसियों के प्रति प्रेम दिखाने का भी एक तरीका है।

यह विश्वास करना बहुत आसान है कि आपके जीवन से जुड़े लोगों के लिए सबसे अच्छा यही होगा कि आप कहीं सच को थोड़ा-बहुत छिपा लें या कहीं उसमें कुछ फेरबदल कर दें। परन्तु यह एक झूठ है। दूसरों के जीवन में सबसे बेहतर और सबसे अधिक समृद्धि लाने वाली बात यह होगी कि आप पूरी तरह से ईमानदार रहें।

हमारी उस आयत को याद रखें। ईमानदारी हम स्वयं निर्धारित नहीं करते। इसका सबसे पहला निर्धारण उस बात से होता है, जिससे परमेश्वर का आदर होता है। और इसका दूसरा निर्धारण दूसरों के प्रति प्रेम से होता है। हम सच का उपयोग अपने निजी स्वार्थों को पूरा करने के लिए नहीं करते।

इस सोच से आपकी कही-अनकही बातों में क्या बदलाव आएगा? हो सकता है कि इससे आप और अधिक स्पष्टवादी बन जाएँ और कठिन बातें कहने के इच्छुक रहें, क्योंकि आप जानते हैं कि यह अच्छा होगा। या फिर, हो सकता है कि इससे आप और अधिक धीरजवन्त बन जाएँ, और दूसरों के प्रति प्रेम के कारण, बोलने से पहले थोड़ा प्रतीक्षा करना सीख जाएँ।

इस पड़ाव पर मैं एक सावधानी की बात कहना चाहता हूँ। "दूसरों के प्रति प्रेम" को हर तरह के पाप के लिए एक बहाना बना लेना बहुत आसान है। यदि हम ही परिभाषित कर लें कि प्रेम करना क्या है, तो जो हमारे लिए सबसे आसान या सबसे स्वाभाविक लगने वाला तरीका है, हम उसी के अनुसार "प्रेम" को परिभाषित करेंगे। जिसके परिणामस्वरूप, हम दूसरों के और स्वयं प्रभु के विरुद्ध पाप कर बैठेंगे।

यहीं पर यीशु के वे शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाते हैं, जिनमें उसने परमेश्वर के प्रेम और पड़ोसी के प्रेम को आपस में जोड़ा है। मैं आपको इसके लिए प्रोत्साहित नहीं कर रहा हूँ कि जो कुछ भी आपको सबसे स्वाभाविक लगे, जो सामाजिक रूप से सबसे अधिक स्वीकार्य हो, या फिर जो किसी परिस्थिति में तकनीकी रूप से पूरी तरह सच भी हो, आप वही कह दें। इसके बजाय, मैं आपको इस बात के लिए प्रोत्साहित कर रहा हूँ कि जब आप वह कहते हैं, जो सही है, तो वह सबसे अधिक प्रेमपूर्ण भी होता है। और जब आप वह कहते हैं, जो सबसे अधिक प्रेमपूर्ण है, तो वह सही भी होता है। समुदाय में ईमानदारी से जीने का यही महत्व है—परमेश्वर की ओर लगे हुए हृदय से बोला गया सत्य दूसरों के प्रति सच्चा प्रेम उत्पन्न करता है।

इस सन्दर्भ में, मैं आपका ध्यान उस बात की ओर लगाना चाहूँगा, जो आपके लिए सबसे अधिक सहायक साबित होगी—आपकी स्थानीय कलीसिया। यह वे लोग हैं, जो आपको यह बता पाने में सक्षम होंगे, कि सत्य का उपयोग करते समय आप दूसरों से प्रेम करने में कहाँ विफल हो रहे हैं, और जहाँ आप बढ़ रहे हैं, वहाँ आपको प्रोत्साहित कर पाएँगे, वे आपकी ही कलीसिया के साथी सदस्य होंगे। इस बात की सबसे अधिक सम्भावना है कि आप नियमित रूप से किस तरह से बातचीत करते हैं, उन्हें इसकी जानकारी होगी। आप नियमित रूप से कैसे पाप करते हैं, इसकी भी उन्हें सबसे अधिक जानकारी होगी। वे ही आपके साथ परमेश्वर का वचन खोलने, और उसके सत्य के प्रकाश में आपकी वाणी की जाँच करने में सबसे बेहतर सक्षम हैं।

वैसे भी, क्या कलीसिया ही हमारी इस आयत का सन्दर्भ नहीं है? पौलुस केवल अपने किसी मित्र को ही नहीं, परन्तु इफिसुस की कलीसिया को निर्देश दे रहा था, कि वे एक दूसरे के प्रति "प्रेम में सच्चाई से चलें।" इस सामूहिक प्रयास से उन सभी का भला होगा।

जो हमें ईमानदारी के अन्तिम सिद्धान्त पर ले आता है।

3. ईमानदारी हमें बढ़ाती है

आपकी ईमानदार बातचीत परमेश्वर की महिमा करती है। यह आपके आसपास के लोगों को प्रोत्साहित करती है, उनसे प्रेम करती है, और उनका निर्माण करती है।

परन्तु शायद परमेश्वर की आज्ञा मानने की उसकी भली योजना में सबसे अद्भुत बात यह है कि ईमानदार होना आपके लिए भी अच्छा होगा। ईमानदारी का महत्व केवल ईश-वैज्ञानिक ही नहीं है—यह बहुत ही व्यक्तिगत् भी है। यह आपके जीवन में हर तरह की बढ़ोतरी लाएगी। इफि. 4:15 में ईमानदार बातचीत का परिणाम देखें: "वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ।"

अब निश्चित रूप से, यह उन लोगों को संदर्भित करता है, जिनसे हम ईमानदारी से बात करते हैं। उनसे प्रेम करने से उन्हें बढ़ने में सहायता मिलेगी। परन्तु यह भी सोचिए कि पौलुस बहुवचन में बात कर रहा है, जिसका अर्थ है कि वह इस बढ़ोतरी में उस व्यक्ति को भी शामिल करता है, जो ईमानदारी से बोलता है। जब आप ईमानदारी से बोलते हैं, उससे परिपक्व न होना असम्भव है।

और यह कोई सामान्य बढ़ोतरी नहीं है। ध्यान दें कि आप किसमें बढ़ रहे हैं! "वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ।"

क्या आपने कभी सोचा है कि सम्भवत: मसीह के साथ आपके रिश्ते में कुछ दूरी आपकी बेईमानी के कारण हो सकती है? ऐसा इसलिए नहीं है कि परमेश्वर स्वयं को आपसे दूर रख रहा है, बल्कि इसलिए है कि आप स्वयं को उससे दूर रख रहे हैं। रिश्तों में ईमानदारी—यहाँ तक कि परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते में भी—निकटता, भरोसे और सच्चे बदलाव के लिए जगह बनाती है। कल्पना करें कि ईमानदार होकर परमेश्वर के साथ आपकी मित्रता कितनी करीबी हो सकती है।

मैं एक व्यक्तिगत् अंगीकार और प्रोत्साहन को साझा करना चाहता हूँ। मुझे हमेशा ईमानदार होने में कठिनाई हुई है। और वे ऐसे तरीके नहीं हैं, जो बाहर के किसी भी व्यक्ति को तुरन्त साफ दिखाई दें। परन्तु भीतर से, लोगों के डर और अस्वीकृति से बचने की अभिलाषा के कारण, मैं अक्सर तब सच बोलने से कतराता हूँ, जब मुझे सच बोलना चाहिए।

इसका अक्सर मेरे सुसमाचार प्रचार पर प्रभाव पड़ा है। इसका मेरे मित्रों के साथ मेरी ईमानदारी पर प्रभाव पड़ा है। इसका मेरे शिष्य बनाने पर प्रभाव पड़ा है। मेरे सभी रिश्ते मेरी बेईमानी से प्रभावित

हुए हैं। शायद मैं अपने पापों का अंगीकार कर लूँ और अपने संघर्ष साझा करूँ, परन्तु मैं हमेशा पूरी तरह से ईमानदार नहीं रहा हूँ। मैं हमेशा उन बातों के बारे में खुलकर बताने के लिए तैयार नहीं रहा, जो वास्तव में शर्मनाक या चुनौतीपूर्ण थीं। और सबसे बढ़कर, इस विफलता का प्रभाव प्रभु के साथ मेरे रिश्ते पर पड़ा है। रिश्तों में ईमानदारी की कमी अक्सर परमेश्वर के साथ ईमानदारी की कमी को प्रतिबिम्बित करती है।

इब्रा. 4:15 कहता है कि मसीह में, हमारे पास कोई ऐसा असक्षम महायाजक नहीं है "जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके।" मेरे लिए समस्या यह रही है कि मैं अपनी स्वयं की कमजोरियों के बारे में हमेशा ईमानदार नहीं रहा हूँ। और इस तरह मैंने स्वयं को उसकी सहानुभूति से वंचित रखा। सुसमाचार उतना मीठा नहीं लगा, परमेश्वर का अनुग्रह उतना गहरा नहीं लगा, और मेरे मन में उसकी बाहें उतनी खुली हुई नहीं लगीं।

जब तक कि एक दिन, मेरे एक प्रिय मित्र ने, जिसने मेरे इस चरित्र पर ध्यान दिया था, इसके बारे में मुझे नहीं टोका। मेरे मित्र ने मुझसे सीधे-सीधे कहा कि मैं बेईमान हूँ। समस्या केवल एक बड़े झूठ से कहीं अधिक गहरी थी। यह बातों को ढाँपने, छिपाने और टालने का एक तरीका बन गया था, जिसने मुझे दूसरों से सच में प्रेम करने और मेरे लिए परमेश्वर के प्रेम को जानने से रोक रखा था।

मैं इस मित्र के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि मैं अपनी बातों से प्रभु का आदर नहीं कर रहा था। मैं दूसरों से वैसा प्रेम नहीं कर रहा था, जैसा मुझे करना चाहिए था। और मेरी बढ़ोतरी रुक गई थी। मेरी जड़ें सच में मेरे पापों के अंधकार और क्रूस की सामर्थ्य में गहरी नहीं उतर रही थीं। मैं रुका हुआ और उथला रह गया था। ऐसा तब तक रहा, जब तक कि यह मित्र मुझसे इतना प्रेमपूर्ण नहीं हुआ कि वह मेरे साथ ईमानदार हो जाए, भले ही मैं उनके साथ ईमानदार नहीं रहा था। ऐसे पल हमें याद दिलाते हैं कि रिश्तों में ईमानदारी हमारे हृदयों को कैसे नया आकार दे सकती है और हमारी आत्मिक बढ़ोतरी को फिर से नया कर सकती है।

ईमानदारी की ओर अपनी यात्रा में आप जहाँ भी हों, मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहूँगा और: यह आपके लिए बहुत ही अच्छा होगा। आप अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह को और भी अधिक जानेंगे। मित्रों के साथ ईमानदारी, रिश्तों में ईमानदारी, और परमेश्वर के साथ ईमानदारी, ये सब एक साथ मिलकर एक गहरी और मसीह जैसी परिपक्वता उत्पन्न करते हैं।

चलिए, हम अपनी परिभाषा को एक बार फिर से देखते हैं। ईमानदारी क्या है? यह दूसरों से प्रेम करने और परमेश्वर का आदर करने के लिए सही बात बताना है।

अत:, हमें पता है कि हम कहाँ जा रहे हैं। परन्तु हम वहाँ कैसे पहुँचेंगे? हम ईमानदारी के उद्देश्य और सिद्धान्तों को तो देखते हैं, परन्तु हम इनका अभ्यास कैसे करें? नीचे सात ऐसे सहायक अभ्यास दिए गए हैं, जो मुझे ईमानदारी की खोज करते हुए मिले हैं।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. ईमानदारी की ओर आपकी यात्रा कैसी रही है? अपनी सफलताएँ और विफलताएँ अपने प्रशिक्षक के साथ साझा करें।
2. कभी-कभी ईमानदारी से बोलना इतना मुश्किल क्यों होता है?
3. परमेश्वर के प्रति ईमानदारी और पड़ोसी के प्रति ईमानदारी के बीच क्या सम्बन्ध है?

2

ईमानदारी से सम्बन्धित सात अभ्यास

1. सन्तुलित रहें (सी-सॉ वाला झूला न बनें)

बचपन में मुझे सी-सॉ अर्थात् ऊपर-नीचे जाने वाला झूला कभी पसन्द नहीं आया। सच कहूँ तो, इस जीवन कौशल मार्गदर्शिका के नाम पर, मैं ईमानदारी से कहता हूँ: सी-सॉ वाला झूला खेल के मैदान का सबसे बेकार सामान है। जब आप कोई झूला झूलते हैं, तो आप लगातार हवा में उड़ते रहते हैं। जब आप फिसलने वाले झूले पर ऊपर से नीचे की ओर फिसलते हैं, तो आपको नीचे तक पहुँचने का एक रोमांचक अनुभव मिलता है। परन्तु जब आप सी-सॉ वाले झूले पर बैठते हैं, तो आप हवा में उड़ने और भूमि पर जोर से गिरने के बीच झूलते रहते हैं। हवा में ऊपर जाओ! भूमि पर धड़ाम से गिरो। इससे जी मिचला जाता है!

इससे पहले कि आप सोचें कि यह पुस्तक अब बेकार की बातें करने लगी है, तो इस सब का अर्थ यह है कि कभी-कभी हम सी-सॉ वाले झूले की तरह "ईमानदारी" की खोज कर सकते हैं। हमारे रिश्ते एक छोर से दूसरे छोर तक झूलते रहते हैं। या तो हम चापलूसी करने वाले चमचे बन जाते हैं, या फिर तीखे आलोचक बन जाते हैं। दोनों ही सूरतों में हम स्वयं को "ईमानदार" बताते हैं, और यह कहते हैं कि हम तो सच बोल रहे हैं। परन्तु वास्तव में, हम कहानी का केवल एक पहलू ही बता रहे होते हैं।

इसलिए, सी-सॉ वाला झूला न बनें।

क्या आपके कुछ करीबी रिश्ते ऐसे हैं, जहाँ आप हमेशा केवल सराहना ही करते हैं? यह ईमानदारी नहीं है। ईमानदारी के महत्व का अर्थ यह स्वीकार करना है कि हम सब पापी हैं, और हम सबको

सुधार और सहायता की आवश्यकता है। हममें से कोई भी अपनी योग्यता के दम पर प्रभु के सामने सिद्धता के साथ खड़ा नहीं होता। ईमानदार होने की आपकी विफलता से आत्मिक रूप से बहुत नुकसान हो सकता है। शायद आप उनके जीवन में पाप को अनदेखा करके पनपने दे रहे हों। शायद आप अपने प्रोत्साहन की सामर्थ्य को कम कर रहे हों। वैसे भी, क्या आपको उन लोगों की ओर से आने वाले प्रोत्साहन से सबसे अधिक हिम्मत नहीं मिलती, जिनके बारे में आप जानते हैं कि वे आपकी चापलूसी नहीं कर रहे हैं? बेईमानी हमारे प्रोत्साहन के प्रभाव को कमजोर कर देती है।

दूसरी तरफ, शायद आपके कुछ रिश्ते ऐसे भी हों, जहाँ आप केवल आलोचना ही करते हैं? आपके पास कहने के लिए कुछ भी अच्छा नहीं होता, और न ही प्रोत्साहन या सहायता के कोई शब्द होते हैं। यदि आप केवल यही सब कह रहे हैं, तो आप सही रास्ते से भटक रहे हैं। वैसे भी, क्या परमेश्वर के पास आपके लिए केवल सुधार के ही शब्द हैं? जब हम केवल आलोचना ही करते हैं, तो हम दो तरीकों से परमेश्वर का अनादर कर रहे होते हैं। पहला, हम अपने साथी मसीही भाई-बहनों के जीवन में पवित्र आत्मा के काम को अनदेखा कर रहे होते हैं। परमेश्वर सभी विश्वासियों के जीवन में काम कर रहा है, और उन्हें अपने जैसा बना रहा है। यदि हम इस बात को कभी नहीं मानते, तो हम उसकी आत्मा की सामर्थ्य का आदर नहीं कर रहे हैं। दूसरी बात, यदि हम बस सुधार ही करते रहते हैं, तो हम अपने आसपास के लोगों पर परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिम्बित नहीं कर रहे हैं। परमेश्वर भी कड़े शब्द बोलता है, परन्तु वह चंगाई वाले शब्द भी बोलता है। मसीही होने के नाते, हम दूसरे लोगों के लिए छोटे मसीह की तरह होते हैं, जो उन्हें परमेश्वर के चरित्र के बारे में कुछ बताते हैं। रिश्तों में ईमानदारी का अर्थ दूसरों पर परमेश्वर का प्रेम, सुधार और प्रोत्साहन प्रतिबिम्बित करना है। आपके शब्द उसके बारे में क्या बताते हैं?

अपने रिश्तों में सन्तुलन बनाने का प्रयास करने के बारे में शुभ समाचार यह है कि हम स्वयं भी अधिक सन्तुलित हो जाते हैं। जब हम दूसरों को प्रोत्साहन देने में आगे बढ़ेंगे, तो हम परमेश्वर के वचन और उसके लोगों से अधिक आसानी से प्रोत्साहन पाने में भी सक्षम होंगे। जब हम दूसरों को उनके पाप दिखाने में सहायता करने में आगे बढ़ेंगे, तो हम स्वयं भी सुधार के विषय में अधिक विनम्रता से प्रतिक्रिया दे पाएँगे।

सी-सॉ वाला झूला न बनें। सन्तुलित ईमानदारी का अभ्यास करें।

2. *नियमित रहें (पैराशूट न बनें)*

कभी-कभी, हमारी "ईमानदारी" का संस्करण कुछ-कुछ पैराशूट जैसा हो सकता है। हम उड़कर उन लोगों के जीवन में पहुँच जाते हैं, जिन्हें हम जानते भी नहीं, और उन्हें ऐसी सच्चाइयाँ बताते हैं, जो उन्होंने पूछी भी नहीं थीं, और फिर इससे पहले कि कोई कुछ बुद्धिमान बने, हम वहाँ से निकल जाते हैं।

जब आप इस बारे में सोचते हैं कि ईमानदारी क्या है, तो आपको समझ आने लगता है कि इसमें क्या गड़बड़ है। हाँ, इसमें "ईमानदारी" की थोड़ी-बहुत झलक तो है, क्योंकि हम सच ही तो बोल रहे होते हैं, परन्तु यह तरीका हमेशा परमेश्वर का आदर करने वाला नहीं होता। हम उसके चरित्र को वैसे प्रतिबिम्बित नहीं करते, जो भरोसेमन्द और विश्वासयोग्य है। और यह दूसरों के लिए प्रेमपूर्ण भी नहीं होता। किसी से प्रेम करने का अर्थ सच में यह समझना है कि उन्हें किस बात की आवश्यकता है। किसी से प्रेम करने का अर्थ उनके साथ तब तक बने रहना है कि हम उनकी बदलने में सहायता कर पाएँ। किसी से प्रेम करने का अर्थ धीरज के साथ बार-बार उन्हीं सच्चाइयों पर वापस लौटते रहना है।

क्या आप कुछ और भी जानना चाहते हैं? पैराशूट वाली ईमानदारी आपकी बढ़ोतरी के लिए सहायक नहीं होती। मित्रों के साथ ईमानदार रहना कठिन होता है। एक बार अपने पापों का अंगीकार कर लेना तो आसान है, परन्तु बार-बार ऐसा करना कठिन होता है। जब आप ऐसा करते हैं, तो दूसरे लोग आपको सच में उसी पापी के रूप में देखने लगते हैं, जो आप हैं। किसी को एक बार कोई "कड़वी सच्चाई" बताना तो आसान है, परन्तु उसके पापों के विरुद्ध लड़ाई में लगातार उसके साथ बने रहना मुश्किल होता है।

अपने जीवन में बेईमानी को पहचानने का एक तरीका इस बात पर ध्यान देना है, कि क्या आप सच बोलने में नियमित नहीं हैं। क्या कुछ ऐसी बातें हैं, जिन्हें एक बार बोलने में तो आप प्रसन्न होते हैं, परन्तु उन्हें दोहराना आपको पसन्द नहीं है? क्या कुछ ऐसे रिश्ते हैं, जिनमें आप कभी आते हैं और कभी बाहर चले जाते हैं?

प्रेम के साथ सच बोलने का अर्थ उसे नियमित रूप से बोलते रहना होता है। इसका यह भी अर्थ है कि आप शायद पहले बिन्दु का भी अभ्यास करने लगेंगे। वैसे भी, जब हम लोगों के जीवन में नियमित रूप से शामिल रहते हैं, तो सन्तुलित सच अपने आप सामने आ जाता है। आरम्भ में, हमने देखा था

कि पाप का कोई क्षेत्र हमारे जीवन पर हावी हो रहा है, परन्तु नियमित अंगीकार के माध्यम से, हमारे मित्र हमें परमेश्वर के उस अनुग्रह के बारे में बताने में सक्षम हो पाते हैं, जिसे हम पहले देख ही नहीं पा रहे थे। पहले तो हम अपने साथी मसीहियों को उनके द्वारा किए गए किसी काम के लिए प्रोत्साहित करना चाहते थे, परन्तु समय के साथ हमें एहसास हुआ कि उनके दु:खों के बीच उन्हें परमेश्वर के चरित्र की याद दिलाना भी आवश्यक है।

नियमितता आपके जीवन में हर तरह की भलाई लाएगी, इसलिए पैराशूट वाला सच बोलने वाले न बनें।

3. विशिष्ट बनें (बादल न बनें)

मैं पोर्टलैंड, ओरेगोन में पला-बढ़ा हूँ। लोग कहते हैं कि वहाँ हर समय बारिश होती रहती है, और सच कहूँ तो, मैं यहाँ आपको यह बताने के लिए हूँ कि वहाँ उतनी भी बारिश नहीं होती। परन्तु अधिकांश समय बादल छाए रहते हैं। न तो अंधेरा होता है, न मूसलाधार बारिश होती है, न बर्फ गिरती है और न ही ओले पड़ते हैं। बस बादल छाए रहते हैं।

चाहे आपको यह बात अच्छी लगे या न लगे, परन्तु मेरे विचार से ईमानदारी दिखाने के हमारे प्रयास अक्सर इसलिए विफल हो जाते हैं, क्योंकि हम भी कुछ हद तक उन बादलों जैसे ही होते हैं। हमारी बातचीत में कोई स्पष्टता नहीं होती। जब हम अपने पापों का अंगीकार करते हैं, तो हम ऐसा सामान्य रूप से ही करते हैं, और दूसरों से इतना कह देते हैं कि "इस सप्ताह हम फिर से विफल हो गए।" जब हमें दूसरे लोगों के पापों से परेशानी होती है, तो हम उनसे कह देते हैं कि वे "घमण्डी," "हठीले," या "परेशान करने वाले" हैं। यहाँ तक कि हमारे प्रोत्साहन में भी हम सामान्य ही होते हैं। हम किसी से कहते हैं कि वे हमें "प्रोत्साहित करने वाले" या "ज्ञानवर्धक" लगे।

परन्तु इन सब बातों से क्या लाभ? यदि हमें किसी बात की पूरी जानकारी ही न हो, तो हम पवित्रता में कैसे आगे बढ़ पाएँगे या दूसरों को उनके पापों से लड़ने में कैसे सहायता कर पाएँगे? यदि किसी से बस इतना कह दिया जाए, कि वह "दयालु" है, तो वह अपने अच्छे कामों को कैसे जारी रख पाएगा? या अपने जीवन में हुई बढ़ोतरी के लिए परमेश्वर का धन्यवाद कैसे कर पाएगा?

बातचीत में ईमानदारी का अर्थ स्पष्टता होता है। परमेश्वर कोई सामान्य रूप से "प्रेम करने वाला" नहीं है। वह विशेष रूप से अपने सृजनात्मक कामों, अपने ईश्वरीय कार्यों, अपने न्याय, और सबसे

बढ़कर, क्रूस पर किए गए अपने कार्य में प्रेम करने वाला है। यदि हम सुसमाचार सुनाते समय बस इतना कह दें कि परमेश्वर "दयालु" और "न्यायी" है, तो भला किसी का उद्धार कैसे हो पाएगा? तकनीकी रूप से ये दोनों बातें सच हैं, परन्तु हमें लोगों को यह बताना होगा कि परमेश्वर ने मसीह के रूप में एक उद्धारकर्ता देकर कैसे विशेष रूप से दया दिखाई है। इसी तरह, परमेश्वर पापों का न्याय करने में भी विशेष रूप से न्यायी है।

क्या आप दूसरों को प्रोत्साहित करने और प्रेरित करने में स्पष्ट होते हैं? क्या आप दूसरों के जीवन में किसी विशेष व्यवहार, आदत या शब्दों की ओर संकेत करते हैं? जब आप अपने जीवन के दु:खों, कमजोरियों या पापों के बारे में बताते हैं, तो क्या वह स्पष्ट होता है?

स्पष्टता का अर्थ न केवल अधिक ईमानदार होना है, बल्कि इसी से हमारी बढ़ोतरी भी होती है। जब आप किसी मित्र से कहते हैं कि आपके दु:ख में, जब उन्होंने आपको कोई विशेष आयत बताई थी, तो उससे आपको बहुत प्रोत्साहन मिला था, और उससे उन्हें परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और दूसरों को उसके बारे में बताने की और भी अधिक प्रेरणा मिली है। जब वे आपसे कहते हैं कि आप बातचीत पर हावी हो जाते हैं, और सारी बातचीत को अपने ऊपर ही ले आते हैं, तो आप आगे बढ़ने में सक्षम हैं।

दूसरे लोगों के जीवन में बादल न बनें। उन पर अस्पष्ट अंगीकारों, सुधारों या प्रोत्साहनों की बौछार न करें। स्पष्ट बनें। इससे आप उन तरीकों पर भी ध्यान देने को विवश हो जाएँगे, जिनसे परमेश्वर आपके और दूसरों के जीवन में विशेष रूप से अच्छा काम कर रहा है। यह आपको अपने पाप की गहराई पर विचार करने के लिए प्रेरित करेगा, जब आप उसे स्पष्ट रूप से नाम देंगे। यह आपको अपने भाई-बहनों के साथ धीरज धरने में सहायता करेगा, जब आप यह महसूस करेंगे कि आपकी विशेष समस्या उनका पाप नहीं, बल्कि उनकी कमजोरी या व्यक्तित्व की कोई अजीब आदत है।

एक धुंधले कोहरे के बजाय, सूरज की तेज किरणों जैसा बनने का प्रयास करें। स्पष्ट बने रहने का अभ्यास करें।

4. सीधा बनें (बड़े चक्के वाला झूला न बनें)

रोलर कोस्टर अर्थात् रेलगाड़ी वाले झूले के साथ मेरा पसन्द-नापसन्द वाला रिश्ता है। मुझे उनमें मिलने वाला रोमांच और एड्रेनालाईन बहुत पसन्द है। साथ ही, वे डरावने हो सकते हैं, और पेट में

गुदगुदी उत्पन्न करने वाले अनुभव भी दे सकते हैं। मुझे आज भी याद है, जब मैं डिज़्नी वर्ल्ड में 'टावर ऑफ टेरर' से नीचे गिरा था।

यद्यपि, एक "रोलर कोस्टर" झूला जिसके प्रति मैं पूरी तरह से उदासीन महसूस करता हूँ, वह बड़े चक्के वाला झूला है। यह डरावना नहीं होता। और यह मजेदार भी नहीं होता। आप बस गोल-गोल घूमते रहते हैं।

बड़े चक्के वाले झूले आमतौर पर मेलों और सैरगाहों में पाए जाते हैं। परन्तु हमारे शब्दों में कहें, तो हमें बड़े चक्के वाले झूले जैसा बनने को लेकर सचमुच चिन्तित होना चाहिए।

क्या आपको कभी किसी से कुछ कहना था, परन्तु आपने सच में वह कहना नहीं चाहा? शायद आपने उनके जीवन में कोई पाप देखा हो, और आप उसे उसके बारे में बताना चाहते हों। आपको कोई अंगीकार करना हो, परन्तु आप इस बात को लेकर चिन्तित हों कि वे कैसी प्रतिक्रिया देंगे।

मेरे विचार से हममें से अधिकांश लोग ऐसे पलों में बड़े चक्के वाले झूले जैसे ही लगते हैं। हम गोल-गोल घूमते तो रहते हैं, परन्तु असल में कहीं पहुँचते नहीं हैं। हम कभी भी अपनी मुख्य बात पर नहीं आते। बातचीत के अन्त में, हम वहीं होते हैं, जहाँ से हमने आरम्भ किया था। शायद सामने वाला व्यक्ति अन्त में जोर देकर बात निकलवाता है, या उसे स्वयं ही अनुमान लगाना पड़ता है कि आप क्या कहने का प्रयास कर रहे हैं।

मैं चाहता हूँ कि आप यह समझें कि यह ईमानदारी वाला व्यवहार नहीं है। जो बात आपको कहनी चाहिए, उससे बचना झूठ बोलने या सच में फेरबदल करने जैसी बेईमानी है। मित्रों के साथ ईमानदार रहने के लिए साहस चाहिए होता है। इसके लिए कड़वी बातें भी कहनी पड़ती हैं। इसके लिए आपको उन बातों को कहने की कीमत चुकानी पड़ती है, जब दूसरे लोग आपसे नाराज या निराश होते हैं।

कोई जटिल बात कहने से बचना अच्छा और प्रेम भरा लग सकता है, परन्तु असल में यह ऐसा नहीं है। जब आप किसी बात को सीधे तौर पर सम्बोधित करने की जिम्मेदारी स्वयं पर नहीं लेते, तो आप यह बोझ दूसरे व्यक्ति पर डाल देते हैं कि वह स्वयं पता लगाए कि आपका अर्थ क्या है। यदि कोई बात कहनी आवश्यक है, तो साहस जुटाकर उसे कह दें। असल में, आपको यह जानकर हैरानी हो सकती है कि उसका परिणाम क्या निकलता है। जब आप लोगों से सीधे तौर पर कोई बात कहते हैं, तो उन्हें अक्सर सम्मानित और प्रेमपूर्ण महसूस होता है।

कड़वाहट चुप्पी में पनपती है। जब हम किसी व्यक्ति से सीधे बात करने के बजाय दूसरों से उसके बारे में गपशप करते हैं, तो हम बेईमान होते हैं। पाप गोपनीयता में पनपता है। जब हम अपने पाप का अंगीकार सीधे तौर पर करने से बचते हैं, जब तक कि कोई हमसे इसके बारे में नहीं पूछे, तो हम बेईमान होते हैं।

मैंने देखा है कि उन लोगों के साथ सीधे-सीधे बात करना सबसे कठिन होता है, जिनकी मैं बहुत अधिक परवाह करता हूँ या जिनका बहुत सम्मान करता हूँ। मुझे चिन्ता रहती है कि यदि मैं अपनी कोई परेशानी अपने किसी प्रियजन को सीधे-सीधे बताऊँगा, तो कहीं मैं उन्हें दु:खी न कर दूँ। या मुझे यह चिन्ता रहती है कि यदि मैं अपने प्रशिक्षक के सामने ईमानदारी से अपने पाप का अंगीकार कर लूँगा, तो कहीं मैं उनका सम्मान न खो दूँ। ऐसे कौन से रिश्ते हैं, जिनमें आपको सीधे-सीधे बात करने में संघर्ष करना पड़ता है? सतह के नीचे ऐसी कौन-सी मूर्तियाँ छिपी हुई हैं, जिनके साथ आपके लिए ईमानदार होना कठिन हो जाता है?

इस बड़े चक्के वाले झूले से नीचे उतरिए। अपने जीवन में दूसरों के साथ सीधे-सीधे बात कीजिए। यह आपके लिए भी और उनके लिए भी अच्छा होगा।

5. विनम्र बनें (सीधी रोशनी न बनें)

हाल ही में मैं एक असली-जीवन्त रंगशाला में गया और वहाँ एक असली-जीवन्त नाटक देखा। मुझे पता है कि आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि मैं इतना अधिक कला-प्रेमी हूँ।

फिल्मों या टीवी के बिलकुल विपरीत, नाटक के बारे में एक बात जो मैं भूल गया था, वह स्पॉटलाइट अर्थात् सीधी रोशनी की शक्ति है। एक अंधेरे मंच पर रोशनी की एक किरण भी एक नाटकीय प्रभाव उत्पन्न कर सकती है। केवल अभिनेता ही दिखाई देता है। उनके आसपास सब कुछ घना अंधेरा होता है, वह एक ऐसा कालापन होता है, जिसे भेदा नहीं जा सकता। आप जानते हैं कि वहाँ और भी सामान होता है, परन्तु सीधी रोशनी का प्रभाव इतना उत्कृष्ट होता है कि वह बाकी सब कुछ लगभग अदृश्य बना देता है।

मैं हैरान होता हूँ कि क्या कभी-कभी आपके रिश्ते भी कुछ ऐसे ही महसूस होते हैं? शायद आप कुछ विशेष लोगों को अनुचित तरीके से अधिक महत्व देते हैं। हो सकता है कि कभी-कभी आप उस सीधी

रोशनी को स्वयं पर ही पड़ने देते हों। मंच पर तो यह मजेदार लग सकता है, परन्तु हमारे जीवनों में ऐसा करना ईमानदार बात नहीं है।

उदाहरण के लिए, आमतौर पर क्या आप अपने पाप पर सीधी रोशनी डालते हैं, या केवल दूसरों के पाप पर ही सीधी रोशनी डालते हैं? क्या आप कभी किसी और की खूबियों पर सीधी रोशनी डालते हैं, या इस बारे में केवल तभी बात करते हैं, जब आपने अच्छा किया हो? या शायद आप अपनी सफलता के बारे में चिन्तन करने के मामले में बहुत अधिक विनम्र हैं, परन्तु कुछ ऐसे लोग भी हैं, जिन्हें प्रोत्साहित करना आप बिलकुल भी पसन्द नहीं करते।

जब हम ईमानदारी की खोज करते हैं, तो हमें विनम्रता के साथ भी ऐसा करना चाहिए। सीधी रोशनी को चालू करने के बजाय, आइए हम मंच की सारी बत्तियाँ पूरी तरह से जला दें। हम सब एक ही चबूतरे पर खड़े हैं। हम सब अलग-अलग तरीकों से सफल या असफल होते हैं। परन्तु बुनियादी तौर पर, हममें से कोई भी बाकी लोगों से अलग नहीं है।

हम सब पाप से संघर्ष करते हैं। कोई भी मनुष्य इतना अधिक सम्मानित, या इतना अधिक परिपक्व नहीं होता कि वे नियमित रूप से पाप से न लड़ें। स्वयं को या किसी और को पाप से ऊँचा होने की तरह मत दिखाइए। यह ईमानदार से भरी बात नहीं है। अपने पाप का अंगीकार करने और अपनी विफलताओं पर चिन्तन करने में फुर्ती दिखाइए। और जिन लोगों का आप सम्मान करते हैं, जब वे स्पष्ट तरीकों से असफल होते हैं या पाप करते हैं, तो उसे सामने लाने के लिए तैयार रहें। जब हम पाप को छोटा करके दिखाते हैं, तो हम परमेश्वर की दया के प्रति अपनी आवश्यकता और क्रूस पर उसके काम के बारे में झूठ बोलते हैं।

दूसरी ओर, सभी मसीहियों के भीतर पवित्र आत्मा काम कर रहा होता है। ऐसा कोई मसीही नहीं है, चाहे वह कितना भी अपरिपक्व या कमजोर क्यों न हो, जिसे पवित्र करने का काम परमेश्वर न कर रहा हो। इसे देखना शायद कठिन हो, परन्तु यह होता है। इस सच्चाई के साथ एक दूसरे को कभी भी प्रोत्साहित न करना या सांत्वना न देना बेईमानी है। हाँ, ऐसे रिश्ते हो सकते हैं, जिन्हें आप मुख्य रूप से सुधार रहे हों। परन्तु जो भी भले काम परमेश्वर कर रहा है, उसे भी बताने में विफल न हों! प्रोत्साहित करना भी शायद वह माध्यम बन सकता है, जिसका उपयोग परमेश्वर उन्हें अपने पाप मिटाने में सहायता करने के लिए करता है।

स्थानीय कलीसिया के इतना अच्छा होने का यह भी एक भाग है। यदि आप अकेले चलने वाले मसीही हैं, तो आप स्वयं को यह विश्वास दिलाकर मूर्ख बना सकते हैं कि आप सबसे अलग हैं। या तो आप इतने बिगड़े हुए हैं कि परमेश्वर के अनुग्रह के योग्य नहीं हैं, या आप इतने परिपक्व हैं कि शायद ही आपको इसकी कोई आवश्यकता है। जब आप दूसरे मसीहियों के जीवन में शामिल होते हैं, तो आपको इन दोनों बातों के पीछे का झूठ तुरन्त समझ आ जाता है। आपको अनुग्रह की आवश्यकता ठीक वैसे ही है, जैसे हर किसी को होती है। और फिर भी, आपके पास दूसरों को देने के लिए बहुत कुछ अच्छा भी है। अकेले रहकर, आप दूसरों के साथ विनम्रता से चलने की क्षमता से स्वयं को वंचित कर लेते हैं। उनका पाप आपको अपने पाप से लड़ने की याद दिलाता है। उनकी भक्ति आपके लिए अनुसरण करने का एक उदाहरण है।

विवाह की ईमानदारी में, यह सिद्धान्त अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह बहुत आवश्यक है कि दोनों जीवनसाथी अंगीकार करने और प्रोत्साहित करने की जगह बनाते हुए ईमानदारी और विनम्रता का अभ्यास करें, और एक दूसरे की आगे बढ़ने में सहायता करें। सीधी रोशनी कभी भी पूरी तरह से सच्ची नहीं होतीं। वे हमेशा एक बात पर अधिक जोर देती हैं और दूसरी को कम कर देती हैं। विवाह सहित अपने सभी रिश्तों में, ईमानदारी का पालन करते हुए विनम्रता का अभ्यास करें।

6. बाइबल के अनुसार चलें (हथौड़ा न बनें)

यदि आपने कभी कोई अदालती नाटक, आपराधिक फिल्म, या जेल तोड़कर भागने वाली फिल्म देखी है, तो उसमें हमेशा न्यायाधीश की कुर्सी के सामने एक नाटकीय दृश्य होता है। आरोपी अपना निर्णय सुनने की प्रतीक्षा में खड़ा होता है। पूरी अदालत कौतुहल में होती है। और फिर, जोर से हथौड़ा पटका जाता है। वह तेज आवाज इस बात का संकेत होती है कि निर्णय सुना दिया गया है।

कभी-कभी हमारी ईमानदारी भी कुछ हद तक एक अदालत जैसी ही महसूस हो सकती है। अन्तर बस यही है कि न्यायाधीश की कुर्सी पर हम बैठ जाते हैं। न्याय का चोगा हम पहन लेते हैं। हथौड़ा पटककर निर्णय हम सुना देते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हम कभी यह नहीं कहेंगे कि हम पूरी तरह सही हैं, और हमेशा न्याय के पक्ष में हैं, या हमारी राय में कोई गलती नहीं है। परन्तु क्या हम कभी-कभी इसी तरह नहीं बोलते? जब हमारे बहाने पवित्रशास्त्र का दर्जा पा लेते हैं, जब हमारी आलोचनाएँ परमेश्वर के वचन के अधिकार के साथ बोली जाती हैं, जब परिस्थिति के बारे में हमारी

समझ में न्यायाधीश के हथौड़े की तरह अन्तिम निर्णय की गूँज होती है, तो हम गलत दिशा में चले जाते हैं। हम जिस गहनता और अचूकता के साथ बोलते हैं, उसमें हम ईमानदार नहीं होते।

अब, मुझे यह कहने के लिए गलत न समझें कि राय रखना, समझदारी भरी सलाह देना, या सुधार करना गलत है। करने के लिए यह एक अच्छी और सही बात है। मैं जो कह रहा हूँ, वह यह है कि एक विशेष तरह की विनम्रता के साथ ईमानदारी ऐसा ही करेगी। जो बाइबल के अनुसार है और जो व्यक्तिगत् है, ईमानदारी उसे अलग-अलग करेगी। बुद्धिमानी के पास अभी भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। परन्तु यह स्थान परमेश्वर के वचन से अलग है।

इसके अलावा, ईमानदारी जितना हो सके, उतने अधिक पवित्रशास्त्र के वचन बोलेगी। यदि आप किसी को सुधार रहे हैं, तो क्या आप अपने मित्र को बाइबल का कोई ऐसा खण्ड दिखा सकते हैं जो उनके पाप के बारे में बात करे? यदि आप अंगीकार कर रहे हैं, तो क्या आप अपने अपराध का वर्णन करने के लिए परमेश्वर के वचन का उपयोग कर सकते हैं? जब हम ऐसा करते हैं, तो हम दूसरों की सहायता करते हैं कि वे हमारी बातों के बजाय, परमेश्वर की बातों के आगे स्वयं को समर्पित करें।

ऐसा करते हुए, हम प्रभु का आदर करते हैं, दूसरों से प्रेम करते हैं, और अपनी सहायता करते हैं। परमेश्वर के वचनों को उनका सही स्थान मिलता है। परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए बुलाए जाने के द्वारा दूसरे लोग परिपक्व बनते हैं। जब हम अपनी राय को कम महत्व देते हैं और उन्हीं वचनों के सामने खड़े होते हैं, जिन्हें हम दूसरों के सामने रखते हैं, तो हम विनम्र हो जाते हैं।

न्यायाधीश की कुर्सी पर न बैठें, उसके वस्त्र न पहनें, और उसका हथौड़ा न पटकें। इसके बजाय, दूसरों के सामने परमेश्वर के सुधार और सांत्वना भरे वचन रखें। जब आप ऐसा करते हैं, तो आप कहीं अधिक ईमानदार, सीधे और प्रेमपूर्ण हो सकते हैं।

और यही हमें ईमानदारी की खोज में अपने अन्तिम व्यावहारिक बिन्दु पर लाता है।

7. प्रार्थना करनेवाले बनें (विरामघड़ी न बनें)

हाईस्कूल में मैंने गाँवों-खेतों से होकर गुजरने वाली दौड़ में हिस्सा लिया था। हमारे पास दौड़ का अभ्यास करने के लिए सब तरह के अलग-अलग तरीके थे। उनमें से कुछ दौड़-पट्टी के चारों ओर छोटी-छोटी दौड़ें होती थीं, और बाकी दिन अन्तराल प्रशिक्षण वाले होते थे, और बाकी के लम्बी दौड़

वाले होते थे। परन्तु इन सभी में जो एक निरन्तर वास्तविकता थी, वह विरामघड़ी थी। चाहे वह 100 मीटर की छोटी दौड़ हो या 75 मिनट की लम्बी दौड़, विरामघड़ी हमेशा चलती रहती थी।

मैं हैरान होता हूँ कि क्या आप भी दूसरों के जीवन में एक विरामघड़ी बन गए हैं? हो सकता है कि आप बाकी सब कुछ सही करते हों। आपका आचरण विनम्र हो, आपके शब्द बाइबल के अनुसार हों, आपका तरीका सीधा हो, आपका अनुप्रयोग विशिष्ट हो, आप दूसरों के जीवन में नियमित हों, और आपकी ईमानदारी सन्तुलित हो। आप सब कुछ सही करते हैं, केवल इसके कि जैसे ही आप बोलते हैं, विरामघड़ी टिक-टिक करना आरम्भ कर देती है। आप यह गिनना आरम्भ कर देते हैं कि किसी को बदलने में कितना समय लगेगा।

हे मित्र, यदि हमें अपनी ईमानदारी में परमेश्वर का आदर करने वाला और प्रेमपूर्ण बनना है, तो हमें विरामघड़ी नहीं बनना है। इसके बजाय, हमें धीरजवन्त और प्रार्थना करने वाला बनना है। दूसरे लोगों के साथ ईमानदार रहने के लिए एक लम्बे रास्ते की आवश्यकता होगी। उस पूरे रास्ते में प्रार्थना करना हमारा लगातार किया जाने वाला अभ्यास होना चाहिए।

यदि आप किसी को बढ़ने में सहायता करने का प्रयास कर रहे हैं, तो प्रार्थना करें। यदि आप अपने जीवन में पाप से लड़ने का प्रयास कर रहे हैं, तो प्रार्थना करें। यदि आप किसी निराश पवित्र जन को उत्साहित होते देखना चाहते हैं, तो प्रार्थना करें। यदि आप अपने जीवन में बढ़ोतरी देखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, तो प्रार्थना करें।

यह मायने नहीं रखता कि आप ईमानदारी की ओर अपनी यात्रा में कहाँ पर हैं, बस प्रार्थना करें।

हमने आरम्भ में जो बात की थी, उसे भूल जाना आसान है। आपका लक्ष्य केवल अपने जीवन के कुछ अभ्यासों में फेरबदल करना नहीं है। आपका लक्ष्य अपने हृदय को बदलना है। ईमानदारी का संघर्ष, परमेश्वर का वैसा आदर करने का संघर्ष है, जैसा हमें करना चाहिए। यह दूसरों से वैसा प्रेम करने की लड़ाई है, जैसा प्रेम करने के लिए हमें बुलाया गया है। यह व्यक्तिगत् बढ़ोतरी का प्रयास है। हृदय का काम ईमानदारी है।

हृदय बदलने का एकमात्र माध्यम पवित्र आत्मा ही है। इसलिए हमें प्रार्थना करनी है। यह काम केवल परमेश्वर ही कर सकता है। इसलिए उसकी सहायता लें। जब आप लोगों के जीवन में नियमित रहने के लिए संघर्ष कर रहे हों, तो उसे पुकारें। जब आप अपनी राय देने में सन्तुलित रहने के लिए संघर्ष

कर रहे हों, तो उससे सहायता माँगें। जब आप अपने पाप के बारे में स्पष्ट रहने के लिए लड़ रहे हों, तो उस पर निर्भर रहें।

ईमानदारी के हमारे प्रयास अक्सर पहली कोशिश में नहीं, बल्कि दूसरी और तीसरी कोशिश में विफल हो जाते हैं। हम एक बार तो उचित सलाह देते हैं। हम एक बार तो निराश लोगों को अच्छे से प्रोत्साहित करते हैं। हम एक बार तो अपने पाप के बारे में गहराई से बताते हैं। परन्तु दूसरी, तीसरी और चौथी बार में हम डगमगाने लगते हैं। क्या मुझे सच में यह बात फिर से बतानी पड़ेगी? क्या हमें सच में इस बात पर फिर से चर्चा करनी पड़ेगी?

ऐसे पलों में, आपके लिए मेरा प्रोत्साहन यही है कि आप प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि परमेश्वर वह काम करे, जो कि आप नहीं कर सकते। प्रार्थना करें कि परमेश्वर अपने नाम और अपने लोगों के निमित्त मध्यस्थता करे। और उसे ऐसा करना बहुत पसन्द है। चाहे आपके शब्द कितने भी सोच-समझकर क्यों न चुने गए हों, वे हृदयों को नहीं बदल सकते। परन्तु वे ऐसा माध्यम बन सकते हैं, जिसका उपयोग परमेश्वर ठीक यही करने के लिए करता है। इसलिए प्रार्थना करें कि वह ऐसा करें।

हमने ईमानदारी के सिद्धान्तों और ईमानदारी के अभ्यास पर विचार किया है। अब हम ईमानदारी की खोज की ओर जाएँगे।

जब आप कल सुबह जागेंगे, तो आप कहाँ से आरम्भ करेंगे? आप इन नये अभ्यासों को कैसे आरम्भ करेंगे? आने वाले सप्ताह के लिए यहाँ तीन विचार दिए गए हैं।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. इन व्यावहारिक सुझावों में से किसे अपनाना आपके लिए सबसे कठिन है, और ऐसा क्यों है?
2. ये सभी सिद्धान्त मिलकर ईमानदार बातचीत के बारे में क्या बताते हैं?
3. जब ईमानदार बातचीत की बात आती है, तो अपनी कमजोरियों के क्षेत्रों का मूल्यांकन करने के लिए आप किससे सहायता माँग सकते हैं? आपके विचार से वे क्या कहेंगे?

3

ईमानदारी की खोज

1. आप कहाँ कमजोर हैं?

ईमानदारी के इतने अधिक पहलू हैं कि आप तुरन्त ही हर बात में एकदम सही नहीं हो सकते। आप यह सब एक ही दिन में नहीं कर सकते। कोई भी व्यक्ति एक दिन बिस्तर से उठकर तुरन्त मैराथन में नहीं दौड़ सकता—कम से कम ठीक से तो बिलकुल नहीं। सबसे आवश्यक बात पहला कदम उठाना है। दरवाजे से बाहर निकलकर अपने आसपास के इलाके में दौड़ लगाएँ। एक प्रचारक के शब्दों में कहें, तो हममें से बहुत से लोग इसलिए अटके हुए हैं, क्योंकि हम वहाँ से आरम्भ करने का प्रयास कर रहे हैं, जहाँ हम हैं ही नहीं। हमें वहीं से आरम्भ करना होगा जहाँ हम हैं।

तो प्रश्न यह है कि आप कहाँ पर हैं? ईमानदारी के तीन सिद्धान्तों में से किस पर आपको अच्छे से अधिक मनन करना चाहिए? ईमानदारी के सात अभ्यासों में से कौन सा आपके लिए सबसे अधिक सहायक होगा?

इस बारे में सोचने का एक तरीका यह है कि आप कहाँ कमजोर हैं? इस सप्ताह उस पर ध्यान दें। अभी सब कुछ ठीक करने का प्रयास न करें। बस काम करने के लिए एक बात चुनें। यदि मुद्दा ईमानदारी के पीछे की प्रेरणाएँ हैं, तो शायद पवित्रशास्त्र में कोई ऐसा विशेष खण्ड हो, जिस पर इस सप्ताह मनन करना अच्छा रहेगा। हर दिन अपने शान्त समय में, उस खण्ड पर फिर से विचार करें।

हो सकता है कि आपने पहचान लिया हो कि परमेश्वर की महिमा के प्रति आपकी लापरवाही ही आपकी बेईमानी का कारण है। इस सप्ताह प्रकाशितवाक्य 4 और 5 अध्याय में, या यूहन्ना 8 अध्याय में यीशु के द्वारा फरीसियों से कहे शब्दों पर कुछ समय बिताएँ। हो सकता है कि दूसरों के प्रति आपकी लापरवाही ही बेईमान बातों की ओर ले जाती हो। गलातियों 6 अध्याय या इफिसियों 4 अध्याय खोलें और दूसरे मसीहियों के प्रति अपनी जिम्मेदारी पर विचार करें।

या ऐसा भी हो सकता है कि आप अनजाने में स्वयं को पूरी तरह से परिपक्व मानते हों और अपनी बेईमानी को अपनी अपरिपक्वता से जोड़ने में आपको कठिनाई होती हो। कुलु. 3:1-17 खोलें और लगातार बढ़ते रहने की अपनी आवश्यकता पर विचार करें। हो सकता है कि आप ईमानदारी के किसी एक अभ्यास में विशेष रूप से कमजोर हों। हो सकता है कि कोई ऐसा विशेष रिश्ता हो, जिसमें आप स्पष्ट रूप से आदतन बेईमान हों। इस सप्ताह उस पर काम करने का प्रयास करें।

2. कौन सहायता कर सकता है?

यीशु का अनुसरण करने के लिए हम सभी को सहायता की आवश्यकता होती है। आप यह अकेले नहीं कर पाएँगे। जिस तरह दूसरे लोगों को आपकी ईमानदारी की आवश्यकता है, उसी तरह आपको भी आपके साथ ईमानदार होने के लिए मित्रों और साथी मसीहियों की आवश्यकता है। ऐसे दो तरह के रिश्ते हैं, जो आपके लिए सहायक होंगे।

सबसे पहले, किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ें, जो आपके साथ चल सके। यह व्यक्ति आपको आपकी बेईमानी के बारे में एक बाहरी दृष्टिकोण दे सकता है। उन्हें यह कहाँ उभरता हुआ दिखाई देता है? वे आपके जीवन में कौन सी विशेष आदतें और तरीके पहचान सकते हैं?

मानवीय शरीर ठीक से इसलिए काम करता है, क्योंकि उसके अंग अलग-अलग होते हैं, और हर अंग को दूसरे अंग की आवश्यकता होती है। यह अच्छी बात है कि पूरा शरीर केवल आँख, या कान, या हाथ नहीं है। आपको अपनी आँखें बहुत पसन्द हो सकती हैं, परन्तु जब सुबह आपको अपनी चाय का प्याला उठाना होता है, तो आप निश्चय ही खुश होते हैं कि आपके पास हाथ भी हैं! इसलिए आँखें हाथों से यह नहीं कह सकतीं कि "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं" (और इसकी तुलना 1 कुरि. 12:21 से करें)।

ईमानदारी की आपकी खोज में भी यही बात सच है। यदि आप आगे बढ़ना चाहते हैं, तो किसी बाहरी व्यक्ति का दृष्टिकोण जानें। ऐसे किसी व्यक्ति को ढूँढ़ें, जिसकी इस मामले में आपसे अलग खूबियाँ हों। यदि आप सच छिपाने में जल्दबाजी करते हैं, तो ऐसे किसी व्यक्ति को ढूँढ़ें, जो अधिक सीधी बात करता हो।

उनसे आपको जवाबदेह ठहराने के लिए कहें। और उन्हें बताएँ कि आपको ईमानदारी बनाए रखने में आमतौर पर कब संघर्ष करना पड़ता है और वह कैसा दिखता है। उन्हें बताएँ कि उन सात अभ्यासों

में से किस पर आप विशेष रूप से काम कर रहे हैं। कलीसिया ठीक इसी काम के लिए बनी है। पौलुस गला. 6:3 में कहता है कि कलीसिया के सदस्यों को "एक दूसरे का भार उठाना चाहिए।" आपको ऐसे किसी व्यक्ति की आवश्यकता है, जो इस भार को उठाने में आपकी सहायता करे।

दूसरी बात, किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ें, जिसकी ईमानदारी को आप अपना आदर्श बना सकें। आपके साथ-साथ चलने वाला कोई भाई या बहन आपको जवाबदेह ठहराने के लिए बहुत आवश्यक है। परन्तु आपसे आगे चलने वाला कोई भाई या बहन भी बहुत आवश्यक है, ताकि वह आपको आशा, दृष्टिकोण और आगे के रास्ते की एक झलक दे सके।

फिर से, इसी कारण से कलीसिया इतनी अच्छी है। कलीसिया में हर कोई बिलकुल आपकी तरह नहीं दिखता! कुछ लोग आपसे आयु में बड़े हैं, कुछ अधिक समझदार हैं, कुछ अधिक परिपक्व हैं या कुछ अधिक वरदान पाए हुए हैं। यह आपकी आत्मा के लिए बहुत अच्छा है। ऐसे लोगों का समूह, जो बिलकुल आपकी तरह दिखता, चलता और बोलता है—उसके बजाय एक ऐसा समूह, जो एक ही गति से चल रहा हो और एक जैसी बातों से संघर्ष कर रहा हो—तो वहाँ ऐसे लोग भी होंगे, जो एक आदर्श हैं और आगे-आगे चल रहे हैं। उनका अनुसरण करें! अपने जीवन को उनके जैसा बनाएँ।

यह बात सभी आत्मिक सच्चाइयों के विषय में सत्य है, और वैसे ही ईमानदारी के हमारे लक्ष्य के विषय में भी सत्य है। पवित्रशास्त्र स्पष्ट कहता है: प्रेम में सच बोलो। ईमानदार रहो। परन्तु जीवन इससे कम स्पष्ट है। कई ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं, जहाँ यह जानना कठिन हो सकता है कि ईमानदारी कैसी दिखती है। इसी कारण से किसी बड़े और बुद्धिमान पवित्र जन का अनुसरण करना बहुत आवश्यक है। उन्हें पता होगा कि आपको सलाह कैसे देनी है। वे उन परिस्थितियों में ईमानदारी का उदाहरण पेश करेंगे, जिनका सामना आपने अभी तक नहीं किया है। वे उन समयों की कहानियाँ बताएँगे, जब वे विफल रहे थे, ताकि आप सीख सकें। वे आपको प्रोत्साहित करेंगे, ताकि अपनी बढ़ोतरी में आप हतोत्साहित न हों।

यदि आपको ऐसा कोई व्यक्ति ढूँढ़ने में कठिनाई हो रही है, तो अपने किसी पास्टर से बात करें। अपने बेईमानी के पाप के बारे में उन्हें बताएँ और सहायता माँगें। चाहे वे स्वयं आपको सलाह दें या कलीसिया के किसी दूसरे सदस्य के पास भेजें, यह आरम्भ करने के लिए एक बढ़िया जगह है।

3. आपको कहाँ से आरम्भ करना चाहिए?

ठीक है, मैंने इसे अन्तिम में कहा है, परन्तु आगे के रास्ते के लिए यहाँ एक अतिरिक्त लाभ वाला सुझाव है: वापस अभ्यास #7 पर जाएँ और वहीं से आरम्भ करें।

प्रार्थना करें।

पूरी लगन से प्रार्थना करें, लगातार प्रार्थना करें, पवित्रशास्त्र के अनुसार प्रार्थना करें, समुदाय में प्रार्थना करें, ईमानदारी से प्रार्थना करें, और विशेष बातों के लिए प्रार्थना करें।

अपने बेईमानी के पाप के बारे में प्रार्थना करें। सहायता के लिए, आशा के लिए, और अपने जीवन में पवित्र आत्मा के काम के लिए प्रार्थना करें। आप अपने दम पर किसी भी काम से होकर आगे बढ़ने में सक्षम नहीं होंगे। आप केवल अपनी इच्छा से स्वयं को अधिक ईमानदार बना पाने में सक्षम नहीं होंगे। शायद आप अपने व्यवहार में कुछ बदलाव ला पाएँ, परन्तु आप अपने हृदय को बदल पाने में सक्षम नहीं होंगे। इसके लिए, आपको आवश्यकता पड़ेगी, कि परमेश्वर आपके भीतर काम करे। इसलिए प्रार्थना करें कि वह ऐसा करे। हमारे परमेश्वर को ऐसी प्रार्थना का उत्तर देना बहुत पसन्द है।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. एक योजना बनाएँ कि आप इस मार्गदर्शिका के इस भाग की सच्चाइयों और सुझावों को अपने जीवन में कैसे लागू करेंगे।

4

ईमानदारी का वादा

हम यह कैसे कर सकते हैं? ऐसा लगता है कि हालात हमारे विरुद्ध हैं। ईमानदार होना बहुत मुश्किल है। ऐसे कई तरीके हैं, जिनसे हम सच का गलत उपयोग करने या उसे तोड़-मरोड़कर पेश करने की परीक्षा में पड़ जाते हैं। हम परमेश्वर और दूसरों के बजाय स्वयं से प्रेम करना और स्वयं का सम्मान करना अधिक पसन्द करते हैं।

दृढ़ बने रहने की सामर्थ्य

पौलुस के शब्दों से प्रोत्साहन प्राप्त करें। जब वह अपनी आत्मिक परिपक्वता के बारे में सोच रहा था, तो उसने ये शब्द कहे: “यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ; पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ, जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था” (फिलि. 3:12)। पौलुस सिद्ध नहीं था, परन्तु वह आगे बढ़ता रहा। उसने दु:ख और दूसरों के पापों को सहा। ऐसा क्यों हुआ? मैं उसी को इसका उत्तर देने देता हूँ: “जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था।”

इस पर विचार करें। आप ईमानदार रहने के लिए, स्वयं को बलिदान करने के लिए, दूसरों से प्रेम करने के लिए और प्रभु का आदर करने के लिए कैसे लड़ सकते हैं? क्योंकि मसीह यीशु ने आपको इसी के लिए पकड़ा है। उसने अपने लहू से आपको खरीदा है। उसने आपकी जगह अपने प्राण दे दिया। आपकी जगह उसका शरीर क्रूस पर चढ़ाया गया। आपकी जगह उसका शरीर कब्र में पड़ा रहा। और वह मरे हुओं में से जी उठा, ताकि आप उसके जी उठने की सामर्थ्य को जान सकें।

इसका अर्थ है कि अब, आपके जीवन में, मसीह के जी उठने की सामर्थ्य आप में काम कर रही है। उसका आत्मा आपके पापों से लड़ने में और उसकी सच्चाई को प्रतिबिम्बित करने में आपकी सहायता हेतु काम कर रहा है।

परन्तु इससे भी बढ़कर, इसका अर्थ है कि एक दिन, आप भी मसीह के साथ जी उठेंगे। एक दिन परमेश्वर सब कुछ नया कर देगा।

दृढ़ बने रहने का वादा

प्रकाशितवाक्य 21:1-3 से उस दिन के वादे पर विचार करें: "फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्‍वर के पास से उतरते देखा। वह उस दुल्हन के समान थी जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, "देख, परमेश्‍वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्‍वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्‍वर होगा।"

सब कुछ नया। सब कुछ धोकर साफ किया हुआ। यदि आपने अपने पापों से मुँह मोड़ लिया है और मसीह पर विश्वास किया है, तो इसमें आप भी शामिल हैं। अब कोई पाप नहीं, कोई दु:ख नहीं। अब बेईमानी, झूठ, बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बातों और असत्य के कोई दाग नहीं। यदि आप मसीह में हैं, तो एक दिन आप उसके लोगों के साथ होंगे, उस दुल्हन की तरह जो अपने पति के लिए सजी-धजी हो। एक दिन, आप परमेश्वर के साथ होंगे।

उसके साथ आपका रिश्ता कैसा होगा? प्रकाशितवाक्य 22:4 में इसका वर्णन सुनें: "वे उसका मुँह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा।"

हे मित्र, एक दिन आप परमेश्वर के आमने-सामने खड़े होंगे। आप उसे सचमुच जानेंगे, और वह आपको सचमुच जानेगा। अब कोई ऐसा झूठ नहीं होगा, जो रिश्तों को तोड़ दे, और न कोई ऐसा छल होगा, जो मित्रता को धुंधला कर दे, और न ही कोई ऐसी बेईमानी होगी, जो विवाह को बर्बाद कर दे। कोई भी बात आपको दूसरों के साथ रिश्ते से अलग नहीं कर पाएगी। कोई भी बात आपको अपने सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता के साथ रिश्ते से अलग नहीं कर पाएगी। एक दिन, मसीह में, आप परमेश्वर के साथ होंगे।

इस पर विचार करना कितना आनन्ददायक है! कितनी गहरी आशा है! क्या यह वादा पाने योग्य नहीं है?

बेईमानी को त्याग दें। ईमानदारी को चुनें। चाहे यह कितना भी कठिन, कितना भी पीड़ादायी, कितना भी अटपटा, या कितना भी शर्मनाक क्यों न हो। क्योंकि आप उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। और क्योंकि उस दिन के आनन्द के बारे में आप आज ही बहुत कुछ जान सकते हैं।

जिस तरह उस दिन आपके रिश्ते पूरी तरह से ईमानदार होंगे, उसी तरह आप आज भी ईमानदार बन सकते हैं। जिस तरह उस दिन परमेश्वर को जानना पूरी तरह से स्पष्ट होगा, उसी तरह आप आज भी उसके साथ ईमानदार रह सकते हैं। सुसमाचार की सामर्थ्य और स्वर्ग के वादे को आपको आज ईमानदार बनने के लिए प्रोत्साहित करने दें।

दूसरों से प्रेम करने और परमेश्वर का आदर करने के लिए सच बोलें। एक दिन, आप केवल यही करेंगे। आप इसे आज ही आरम्भ कर सकते हैं।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. स्वर्ग के बारे में सोचने से आपको इस जीवन में ईमानदार रहने में कैसे सहायता मिलती है?
2. अधिक ईमानदारी से बोलने का प्रयास में आपका पहला कदम क्या है?
3. आप अपनी योजना किसे बता सकते हैं?

THE MENTORING PROJECT

क्रिश्चियन लॉरेंस, वॉशिंगटन डी.सी. में कैपिटल हिल बैपटिस्ट चर्च में पास्टर के सहायक के तौर पर सेवा करते हैं। उनकी पत्नी, क्लो से उनका विवाह हुआ है।